एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 02 (मार्च-अप्रैल, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

फूलगोभी में उर्वरक तथा वातावरण के कारण उत्पन विकार व नियंत्रण

(*अमृतपाल सिंह, डॉ. पी के यादव, डॉ. आर के नारोलिया एवं महेश कुमार मिमरोट)
स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर
* aman.raman13@gmail.com

ब्राउनिंग

लक्षण: यह फिजियोलॉजिकल विकार मुख्य रूप से बोरोन की कमी से होता है जिस मृदा में बोरोन की कमी होती है उस खेत में फूलगोभी की खेती करे तो फूलगोभी के फूल पर भूरे रंग के धब्बे दिखते है जिससे फूलगोभी की मार्केट मूल्य कम हो जाता है

नियंत्रण: इसके नियंत्रण के लिए बोरेक्स 10-15 किलो प्रति हेक्टेयर की दर से मिट्टी में डाला जाता है। यदि अधिक कमी हो तो बोरेक्स के घोल 0.25% से 0.5% की दर से छिड़काव भी ककर सकते है। यानी 1 लीटर शुद्ध पानी पर 2.5 से 5 ग्राम बोरेक्स उर्वरक। खाद का छिड़काव सुबह के समय या शाम के समय करना चाहिए।

व्हिपटेल

लक्षण: यह विकार मोलिब्डेनम की कमी से होता है। फूलगोभी के युवा पौधे क्लोरोटिक हो जाते हैं तथा थोड़े समय बाद इनका रंग सफेद हो जाता हैं, विशेष रूप से पत्ती के किनारों के साथ, पत्ते भी कटे और मुरझा जाते हैं। व्हिपटेल उच्च नाइट्रेट आपूर्ति और कम मोलिब्डेनम के कारण होता है। इसलिए अम्लीय मिट्टी में नाइट्रोजनयुक्त उर्वरकों के भारी प्रयोग से बचना चाहिए।

नियंत्रण: पौधों को खेत में लगाए जाने पर 1.5 किलो सोडियम या अमोनियम मोलिब्डेट प्रति हेक्टेयर उर्वरक या सिंचाई के पानी के साथ मिलाकर लगाने की सलाह दी जाती है। फसल में 0.1% अमोनियम मोलिब्डेट का छिड़काव भी किया जा सकता है।

बटनिंग

बटनिंग में फूलगोभी के फूल का आकार छोटा रह जाता है इसका मुख्य कारण अधिक उम्र के पौधों की रोपाई, खराब नाइट्रोजन की आपूर्ति, और किस्मों का गलत चयन है, जिसका अर्थ है लेट मौसम में उगने वाली किस्मो की जगह अर्ली किस्मो का प्रत्यारोपण और इसके विपरीत।

रैसिनेस्स

इस विकार में फूलगोभी की सतह मखमली या दानेदार दिखाई देता है। किसी विशेष किस्म के लिए आवश्यक इष्टतम तापमान से अधिक या कम तापमान के कारण, फूल के विकास के समय तापमान में उतार-चढ़ाव, खराब बीज स्टॉक आमतौर पर पकने का कारण बनता है। उचित किस्म का चयन और सही समय पर रोपाई इस रोग को नियंत्रित करती है।

हैल्लो स्टेम

यह विकार बोरॉन की कमी और नाइट्रोजन की अधिक आपूर्ति के कारण होता है। इसे 15-20 किग्रा/हेक्टेयर की दर से बोरेक्स का छिड़काव करके नियंत्रित किया जा सकता है। इसके नियंत्रण के लिए पौधो के बीच की दुरी कम की जाती है

AGRI ARTICLES
Publishing Skills...
E-Magazine for Agricultural Articles
(www.agriarticles.com)